सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएँ (ढंग)
(Processes Or Modes Of Social Change)

सामाजिक परिवर्तन एक तटस्थ शब्द है जो समाज मे आने वाले बदलाव को विभिन्न कालों के सन्दर्भ में सूचित करता है। जब हम यह कहते हैं कि समाज मे परिवर्तन हो रहा है तो इससे परिवर्तन की दिशा नियम, सिद्धान्त या निरन्तरता प्रकट नही होती। मैकाइवर एव पेज, हर्बर्ट स्पेन्सर, हॉबहाउस एव सोरोकिन आदि ने सामाजिक परिवर्तन की विभिन्न प्रक्रियाओं एव ढगों का उल्लेख किया है और विभिन्न समाजशास्त्रीय अवधारणाओ को जन्म दिया है। इन अवधारणाओं में प्रक्रिया (Process), आन्दोलन (Movement) वृद्धि (Growth), उद्विकास (Evolution), विकास (Development) अवनति (Regress), प्रगति (Progress), क्रान्ति (Revolution), अनुकूलन (Adaptation) आदि प्रमुख हैं। इनमे से कुछ का हम यहाँ उल्लेख करेंगे।

(1) प्रक्रिया (Process)— जब परिवर्तन में निरन्तरता का भाव शामिल हो तो उसे प्रक्रिया कहते हैं। मैकाइवर कहते हैं "प्रक्रिया का अर्थ वर्तमान शक्तियों की क्रियाशीलता द्वारा एक निश्चित रूप में निरन्तर परिवर्तन से है।" उदाहरण के रूप में, हम समायोजन एव विघटन की प्रक्रिया का उल्लेख कर सकते हैं। प्रक्रिया उत्थान और पतन, प्रत्यक्ष और परोक्ष किसी भी ओर तथा किसी प्रकार की हो सकती है। इस प्रकार प्रक्रिया मे परिवर्तन का एक निश्चित क्रम होता है जिसके द्वारा एक अवस्था दूसरी में विलीन हो जाती है। उदाहरणार्थ, जब हम यह कहते हैं कि भारत मे सयुक्त परिवार विघटन की प्रक्रिया में हैं तो हमारा तात्पर्य यह है कि सयुक्त परिवार एकाकी परिवार की दिशा मे निरन्तर परिवर्तित हो रहे हैं और सयुक्तता की अवस्था एकाकी अवस्था में विलीन हो रही है।

(2) उद्विकास (Evolution)— सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया या ढग उद्विकास है। उद्विकास के रूप में सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या करने वालों मे हर्बर्ट स्पेन्सर प्रमुख हैं जिन्होंने उद्विकास की अवधारणा डार्विन से ग्रहण की थी। डार्विन ने जीवों का उद्विकास सिद्धान्त 1859 मे अपनी कृति *The Origin of Species* में प्रस्तुत किया था। आपने कहा था कि जीवों का विकास सरलता से जटिलता की ओर, समानता से असमानता की ओर निरन्तर एव सुनिश्चित स्तरों में हुआ है। डार्विन के इस सिद्धान्त को स्पेन्सर ने समाज पर लागू किया और कहा है कि समाज का उद्विकास भी जीवो की तरह ही हुआ है। स्पेन्सर ने सामाजिक उद्विकास के चार स्तरों— जगली अवस्था, पशुचारण अवस्था, कृषि अवस्था एव औद्योगिक अवस्था का उल्लेख किया। जब परिवर्तन एक निश्चित दिशा म निरन्तर हो तथा रचना व गुणों में भी परिवर्तन हो तो उसे हम उद्विकास कहते हैं। इसे हम एक सूत्र द्वारा प्रकट कर सकते हैं–

गुणात्मक परिवर्तन + रचना में परिवर्तन + निरन्तरता + दिशा = उद्विकास।

उद्विकास में किसी वस्तु के अतिरिक्त गुणों में परिवर्तन होता है। यहाँ उद्विकास एव वृद्धि (Growth) में अन्तर करना आवश्यक है। जब किसी वस्तु में परिमाणात्मक (Quantitative) परिवर्तन होता है तो उसे हम वृद्धि कहते हैं। इस प्रकार वृद्धि मे भी परिवर्तन की दिशा स्पष्ट होती है। वृद्धि आकार में होने वाले परिवर्तन को सूचित करती है।

(3) प्रगति (Progress)—अच्छाई की ओर होने वाले परिवर्तन को प्रगति कहा जाता है। कई विद्वानों ने उद्विकास एवं प्रगति में कोई भेद नहीं किया है जबकि इन दोनों में पर्याप्त अन्तर है। ऐसे परिवर्तन जो हमारी इच्छाओं एवं लक्ष्यों के अनुरूप हों प्रगति के नाम से जाने जाते हैं। प्रगति का सम्बन्ध सामाजिक मूल्यों और आदर्शों से है अर्थात् समाज जिन लक्ष्यों को आदर्श एवं वांछित मानता है, उसी दिशा में होने वाले परिवर्तन प्रगति के अन्तर्गत आयेंगे। इस प्रकार प्रगति एक मूल्यावलम्बित शब्द (Value-ladden term) है। प्रगति का सम्बन्ध नैतिकता से भी है। समाज जिन कार्यों और उद्देश्यों को नैतिक या अच्छा मानता है उस ओर परिवर्तन प्रगति कहलाता है। प्रगति की माप सम्भव है। चूंकि प्रत्येक समाज की प्रगति भिन्न-भिन्न समाजों की दृष्टि से अलग-अलग है। अतः एक समाज में जिसे प्रगति कहते हैं हो सकता है दूसरे समाज में वही अवनति मानी जाती हो। उदाहरण के लिए रूस में जनसंख्या वृद्धि को प्रगति माना गया जबकि भारत में अवनति।

(4) अनुकूलन (Adaptation)— परिवर्तन की प्रक्रिया अनुकूलन है। अनुकूलन में एक व्यक्ति दूसरे से समायोजन करने का प्रयत्न करता है। अनुकूलन किस सीमा तक होता है इस बात को प्रकट करने के लिए कुछ अन्य शब्दों जैसे अभियोजन (Adjustment), समायोजन (Accommodation), आत्मीकरण (Assimilation) तथा एकीकरण (Integration) आदि का प्रयोग किया गया है। अनुकूलन की प्रक्रिया दो बातों की ओर संकेत करती है— (1) व्यक्ति अपने को परिस्थिति के अनुसार ढाल ले, (2) पर्यावरण या परिस्थितियों को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार संशोधित कर ले। इस प्रकार अनुकूलन भी एक प्रकार का परिवर्तन है जो सभी समाजों में पाया जाता है।

(5) विकास (Development)— यह किसी वस्तु की शक्ति में धीरे-धीरे होने वाले परिवर्तन का सूचक है। उदाहरण के लिए मानव का विकास जब बालक से युवा अवस्था में होता है तो उसमें निश्चित जैविक एवं मनोवैज्ञानिक परिवर्तन होते हैं। जब कोई समाज पशुचारण अवस्था से औद्योगिक अवस्था में परिवर्तित होता है तो उसे हम सामाजिक विकास कहेंगे। विकास के लिए कई बार जान-बूझकर निश्चित दिशा की ओर परिवर्तन लाये जाते हैं। उदाहरण के लिए, गाँवों के विकास के लिए सामुदायिक विकास तथा समन्वित ग्रामीण विकास योजनाएँ इसी प्रकार के प्रयत्न हैं। हॉबहाउस ने अपनी पुस्तक 'Social Development' में विकास के चार मापदण्डों का उल्लेख किया है। वे हैं— मात्रा में वृद्धि (Increase in Scale), कार्यक्षमता (Efficiency), आपसी सहयोग (Mutuality) तथा स्वतन्त्रता (Freedom)। ये विकास को एक ऐसी प्रक्रिया मानते हैं जिससे सभी समाज गुजरते हैं।

(6) क्रान्ति (Revolution)—क्रान्ति परिवर्तन की तीव्रता एवं आकस्मिकता को प्रकट करती है। इसमें परिवर्तन का क्रम टूट जाता है और यकायक परिवर्तन प्रकट होते हैं। हॉपर ने अपनी पुस्तक 'Revolutionary Process' में लिखा है, "सामाजिक क्रान्ति वह तीव्र परिवर्तन है जिसमें व्यक्ति को एक दूसरे से सम्बन्धित रखने वाली राजनीतिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाती है और सरकार अस्थायी रूप से एक कार्यशील सत्ता के रूप में नहीं रह पाती। इस दशा में समाज की मौलिक एकता भंग हो जाती है एवं सामाजिक व नैतिक मूल्य समाप्त होने लगते हैं। इसमें

सामाजिक संरचना का स्थायी रखने वाली औपचारिक मान्यताएँ अस्थायी रूप में नष्ट हो जाती हैं। यदि क्रान्ति में अधिक तीव्रता आती है तो सभी प्रमुख संस्थाएँ काफी परिवर्तित हो जाती हैं। इस प्रकार राज्य, धर्म परिवार व शिक्षा अपने मूल रूप में काफी बदल जाते हैं।

जब किसी समाज में असन्तोष शोषण, तनाव, अत्याचार आदि में वृद्धि होती है तो क्रान्ति जन्म लेती है। फ्रान्स रूस चीन, क्यूबा आदि देशों में होने वाली क्रान्ति इसी बात की द्योतक है। सामाजिक क्रान्ति दो प्रकार से हो सकती है—हिंसात्मक एवं अहिंसात्मक तरीके से। सेना व शक्ति के माध्यम से होने वाला परिवर्तन जिसमें खून बहाया जाता है हिंसात्मक क्रान्ति कहलाती है। ऐसी क्रान्ति रूस और चीन में हुई थी। भारत में शान्तिपूर्ण तरीके से किये जाने वाले परिवर्तन अथवा औद्योगिक क्रान्ति अहिंसात्मक क्रान्ति के उदाहरण हैं। कुछ विद्वान क्रान्ति को विघटन की श्रेणी में रखते हैं जबकि कुछ इसे परिवर्तन का सशक्त माध्यम समझते हैं।

	उदविकास-किसी भी दिशा में होने वाला क्रमबद्ध परिवर्तन
	प्रगति- समाज स्वीकृत मूल्यों की ओर परिवर्तन
	विकास- सदैव ऊपर की ओर होने वाला परिवर्तन
	क्रान्ति- अचानक होने वाला परिवर्तन जिसमें कोई क्रम न हो

सामाजिक उद्विकास प्रगति विकास और क्रान्ति को हम उपर्युक्त चित्र द्वारा व्यक्त कर सकते हैं।

भारत में सामाजिक परिवर्तन की जो प्रक्रियाएँ चल रही हैं, उनमें संस्कृतीकरण, पश्चिमीकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण, लौकिकीकरण एवं आधुनिकीकरण प्रमुख हैं। हम यहाँ कुछ प्रक्रियाओं पर आगे के अध्यायों में विस्तार से चर्चा करेंगे।